ISSN: 2350-0905

CTBC's

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Special Issue on

संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका

Volume : 2 / Issue : 3 (Special Issue)
January 2015

Website : www.ctboracollege.edu.in
Email : ctbcsirj@gmail.com

वेब पत्रिकाओं में हिंदी का विकासात्मक परिदृश्य

किसी भाषा की अभिव्यक्ति शक्ति का अध्ययन वर्तमान समय में करना हो तो निसंदेह हम मीडिया की शक्ति हमारा पहला प्रमाण होगी। साहित्य भी मीडिया के इस 'विश्वग्राम' चक्र का अभिन्न अंग है। जन–संचार क्रांति के इस युग ने समाज, संस्कृति, राजनीती आदि सभी क्षेत्रों को अने नियंत्रण में किया है। हिंदी भाषा एवं साहित्य का संबंध पत्र–पत्रिकाओं द्वारा ही मीडिया से जुड़ा है। हिंदी भाषा तथा साहित्य के प्रचार–प्रसार में पत्र–पत्रिकाओं का बड़ा योगदान है। आधुनिक भारत के सामाजिक जागरण, स्वतंत्रता आंदोलन तथा जनतंत्र की नीव रखने के लिए मुद्रित माध्यमों का योगदान अतुलनीय है।

विभिन्न हिंदी साहित्यकारों ने प्रथम पत्रकार, संपादक तथा सृजनकर्ता की भूमिका निभाई। जिनमें भारतेंदु, महावीर प्रसाद त्रिवेदी, पंत, गुप्त, प्रसार, निराला, प्रेमचंद आदि नाम उल्लेखनीय हैं। हिंदी की मुद्रित पत्र–पत्रिकाओं का योगदान वर्तमान समय तक जारी है। उदंत मार्तंड समाचार पत्र से लेकर कविवचनसुधा मासिक, हरिश्चंद्र मैगजीन, हिंदी प्रदीप, भारत मित्र, सरस्वती, भाग्योदय कर्मवीर आदि पत्रिकाओं द्वारा राष्टभीय जन–जागरण तो हुवा ही है, परंतु हिंदी का अमर साहित्य भी इनमें प्रथम प्रकाशित हुवा है। स्वतंत्रता के बाद भी हंस, जागरण, प्रतीक, आलोचना, मधुमती, वागर्थ, संबोधन, युध्दरत आम आदमी, बयान आदि पत्रिकाओं ने दलित विमर्श, नारी विमर्श, आधुनिक बोध, यथार्थवाद, उत्तर–आधुनिक विमर्श आदि नवविमर्शो की सार्थक पहल की है। कथा, काव्य, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार यात्रा–वर्णन हायक आदि नव्य विधाओं का हिंदी लेखन प्रकाशित होता रहा।

इक्कीसवीं सदी वेब मीडिया की है। मीडिया में उत्कर्ष हुवा और वेब मीडिया का जन्म हुआ। भाषा बहता नीर है, वेब मीडिया के साथ उसने भी उपना रुप बदन लिया। आज कम्प्यूटर, मोबाईल लॅपटॉप, आई पोड, टॅब आदि भौतिक सुविधाओं के जोडने के लिए मुद्रित माध्यम का रुप बदलकर आधुनिक रुप में वेब साहित्य का निर्माण हुवा। वेब पेज़ पर लिखा जानेवाला साहित्य वेब पेज के रुप में प्रस्तुत हुवा।

वेब पर वेब पत्रिकाओं का आरंभ १९९६ में माना जाता है। पूर्णिमा वर्मन का नाम वेब पर हिंदी की साहित्यिक पत्रिका संपादित करनेवालो में प्रमुख है। सन २००० से अभिव्यक्ति तथा अनुभूति नामक ऑनलाईन पत्रिकाओं का प्रकाशन आज तक सफलता से हो रहा है। इसी के साथ समकालीन हिंदी नव–वेब साहित्य लेखन का आरंभ ब्लॉग लेखन द्वारा हुवा है, जिसमें आलोक कुमार का नाम प्रमुख है। जिन्होंने २००३ में ९.२.११ नामक हिंदी का पहला ब्लॉग तैयार किया। फिर २००७ में रवीन्द्र प्रभात ने ब्लॉग द्वारा वेब हिंदी साहित्य की आलोचना आरंभ की। पहली बार रवीन्द्र प्रभातजीने साहित्य के इतिहास लेखन का आरंभ किया। इसी के साथ उत्कृष्ट ब्लॉगर को परिकल्पना सम्मान भी दिया जाने लगा। जिसके कारण ऑनलाईन हिंदी लेखन के लिए प्रेरणा प्राप्त हुई।

इक्किसवीं सदी के इस आरंभिक दशक में हिंदी ऑनलाईन पत्रिकाओं की होड़ मच गई वर्तमान में उपलब्ध कुछ प्रमुख वेब पत्रिकाओं कि सूची : निम्न–लिखित तालिका में दी गई है–

ऑनलाईन पत्रिकाएँ

१	अक्षर पर्व	९	भारतीय पक्ष	१७	साहित्य शिल्पी
२	अनुभूति	१०	श्रचनाकार	१८	सृजन गाथा
३	अनुरोध	११	लघुकथा.कॉम	१९	हिंदी युग्म
४	उर्वशी	१२	लेखक मंच	२०	हिंदी कुंज
५	अभिव्यक्ति	१३	लेखनी	२१	हिंदी नेटर
६	कविता कोश	१४	समयांतर	२२	हिंदी समय
७	गध कोश	१५	समालोचन		
८	जनकी पुल	१६	साहित्य कुंज		

साजिश में जुटा है।''[३] इस साजिश को तोडने के लिए हिंदी साहित्यकार एवं राष्टभभाषा प्रेमी को ही आगे बढ़ना होगा। वेब साहित्यकार सुधाकर मिश्रजी कहते है। ''आज मीडिया ने भाषाई संस्कारों को पूरी तरह विकृत कर दिया है, बाजारने हमारे भीतर की रचनात्मकता को भी नकली और सतही बना दिया है। ऐसे में साहित्य ही एक रास्ता है जहाँ हम अपने मूल्यों को बनाए और बचाए रख सकते हैं।''[४]

निष्कर्ष रुप में हम यह कह सकते हैं कि ऑनलाईन पत्र–पत्रिकाओं का यह किशोर काल है जिनमें विचारों के आंदोलन बढ़ रहे हैं पर एक स्थिर एवं गंभीर विचार वेब–पत्रिकाओं में दिखायी नहीं देता है, जो मुद्रित–पत्रिकाओं में हंस, बयान, वागर्थ, मधुमती आदि में दिखाई देता है। यह सराहनीय बात है कि वेब–पत्रिकाओं ने हिंदी नव साहित्यकारों को मौका दिया। साथ ही वर्तमान युवा पीढी को साहित्य से जोड़ा है। वेब पर उपलब्ध साहित्यिक सामग्री अगर अपनी क्षमता का परिचय नहीं देगी तो ई–कचरा बन जाएगी। इसलिए स्पर्धा और बाज़ारवादी युग में अपने अस्तित्व को बचाने के लिए वेब–पत्रिकाओं के संख्यात्मक विकास से अधिक गुणात्मक विकास की और ध्यान देना जरुरी है। इस वैश्वीकरण के अखाड़े में जिसमें क्षमता है वही टिक पाएगी। इसलिए वेब पत्रिकाओं के भविष्य के बारे में हम इतना ही कह सकते हैं–

अब हवायें करेगी रोशनी का फैसला।
जिन चिरागों में दम होगा वहीं जलेंगे।।

संदर्भ

१. ब्लॉगिंग ऑन– लाईन विश्व की आज़ाद अभिव्यक्ति– बालेन्दु शर्मा दधीच (http://balendu-com)
२. www.pustakvishwa.com/content/खलील जिब्रान
३. पहल पत्रिका, जुलाई–अगस्त २०१३, पृष्ठ ९०– सं. ज्ञानरंजन
४. नया मीडिया और नये मुद्दे– सुधीश पचौरी
५. वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रुझान– शालिनी जोशी, शिवप्रसाद जोशी

web site

1. http://me.scientificworld.in/2013/12/online-hindi-magazine.html.
2. http://en.wikipedia.org/wiki/hindi_blogoshere
3. www.abhivyakti.hindi.org
4. Www.anubhuti-hindi.org
5. http://www.garbhanal.com/
6. www.gyandarpan.com

प्रा. देवेंद्र बहिरम
एम. जे. एस. कॉलेज, श्रीगोंदा
तह. श्रीगोंदा जि. अहमदगनर
भ्रमणध्वनी– ९५४५१०४९५७
Email:-bahiram241@gmail.com